अध्याय – 3

शरद जोशी के नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य

अध्याय – 3

शरद जोशी के नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य

भूमिका :–

शरद जोशी मुख्यतया व्यंग्यकार की हैसियत से मशहूर है। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा सर्वाधिक व्यंग्य राजनीतिक क्षेत्र को परिलक्षित कर अभिव्यक्त किया है। साहित्य पर सबसे अधिक प्रभाव राजनीति का ही पड़ता है। अतः उनके साहित्य में राजनीतिक व्यंग्य को ही प्रमुखता मिली है। उनके दो व्यंग्य नाटक "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ", "अन्धों का हाथी" इसका अपवाद नहीं हैं। नाटककार शरद जोशी ने अपने दोनों आलोच्य नाटकों में राजनीति के विविध क्षेत्रों में दिखाई देनेवाले व्यंग्य को ही उजागर किया है। प्रस्तुत अध्याय का मुख्य प्रतिपाद्य दोनों नाटकों में चित्रित राजनीतिक व्यंग्य का विवेचन, विश्लेषण करना है।

नाटककार शरद जोशी ने अपने दोनों नाटकों में राजनीतिक क्षेत्र को विशेष महत्त्व दिया है और तदनुसार राजनीति के विविध पहलुओं को ध्यान में रखकर उनका विवेचन और विश्लेषण करने का हमारा यह एक लघु प्रयास है।

आत्मस्तुति का शिकार नवाब :–

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में शरद जोशी ने नवाब की आत्मस्तुति के द्वारा आज के नेता लोग कैसे अपनी खुद की प्रशंसा करते हैं उस पर व्यंग्य किया है। इन लोगों को सिर्फ अपनी झूठी प्रशंसा करने में ही आनंद मिलता है। झूठी शान के लिए ही ये लोग जीते है। नवाब का यह कथन द्रष्टव्य है – "हम एक समझदार, नेक और रहमदिल नवाब के रुप में मशहूर होने पर तुले हैं तो कल्चर के मामले में पीछे क्यों रहें।[1] जब सूत्रधार नाटक के बारे में नवाब से बातचीत करता है तब नवाब अपनी प्रतिष्ठा के लिए "कलचरल डिपार्टमेंट" खोलने के बारे में आश्वासन देते हैं। वस्तुतः नवाब की दृष्टि में केवल एक ही नाम महत्त्वपूर्ण

है कि समाज में नवाब का नाम रोशन हो, जनता में नवाब की ही स्तुति हो। स्वातंत्र्योत्तर भारत में साहित्य अकादमी, सांस्कृतिक विभाग आदि बड़े बड़े नामवाले विभाग दिखाई देते हैं। इन विभागों में प्रत्यक्ष काम कितने सही रुप से चलता है, उसकी ओर आज के नेताओं का ध्यान नहीं है। किंतु अपनी प्रतिष्ठा और स्तुति के लिए ही "कल्चरल विभाग" देश में या राज्य में खोल देते हैं। आजकल राजनीतिक क्षेत्र में नेताओं की एक ऐसी होड़ लगी रही है कि प्रत्येक नेता अपने–अपने क्षेत्र में कल्चरल डिपार्टमेंट या अन्य विभाग खोलने में प्रयत्नशील है। वस्तुतः आज का नेता न समझदार है, न नेक है, न रहमदिल . यह सब दिखावा ही दिखावा है । कल्चर के नाम पर सामान्य जनता का अप्रत्यक्ष शोषण ही है।

<u>कर्तव्य विमुढ नवाब</u> :–

शरदजी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब पर तीखे व्यंग्य किये हैं। यह नवाब आज के नेता, मंत्री लोगों का ही प्रतीक है। नवाब जब जनता के सामने अपने विचार बताते हैं तब हमें पता चलता हैं कि नवाब के विचार कितने सीधे हैं, उनके विचार कभी भी नेक नहीं होते।क्योंकि , समाज के लिए कुछ अच्छा करना ही नवाब का काम होता है परंतु इस राज्य के नवाब तो जेल की दीवारें दो–दो मीटर ऊपर उठवाते हैं क्योंकि ठेकेदारों को काम मिलें और बहादुर चोर, डाकुओं को भागने के लिये चुनौती मिले। और नवाब को आशा है कि ये चोर, डाकू भी फॅादने के लिए कोशिश जरूर करेंगे। ऐसे यह नवाब कुछ भी बेकार के कार्य करते रहते हैं और खुद को बड़े समझदार और होशियार आदमी समझते हैं। नवाब के शब्दों में "दूसरे उन बहादुर चोर, उचक्कों, डाकुओं ओर खुनियों को जो जेल की दीवारें फॅादते हैं, उनके सामने एक नयी चुनौती हमने खडी की, चुनौती नयी और हमें उम्मीद है पूरी कि वे उसे महसूस करेंगे और फॅादने की कोशिश करेंगे क्योंकि लगन और मेहनत से ही इन्सान आगे बढ़ता है।[2]

ये नवाब राज्य में कोई अच्छा कार्य नहीं करते जैसे कि स्कूल खोलना, आश्रम खोलना, शहर में सुधार करना ऐसे कुछ भी अच्छे काम नवाब नहीं करते। और समाज ओर भी खराब करने के लिए डाकुओंको, चारोंको, खुनियोंको चुनौती देते हैं। शरद जोशी ने इस

नाटक के नवाब को आज के मंत्री, नेता लोगों के जैसा दिखाया है। जो खुद अच्छे काम नहीं करते। और समाज के बारे में हमेशा बुरा सोचते रहते हैं। उन्हे ऐसा लगता है कि बड़े–बड़े भाषण देने से समाज में उनकी इज्जत बढ़ जायेगी। असल में उन मंत्री, नेता लोगों को भाषण भी देना नहीं आता। सब विचार उनके पी.ए. या नौकरों से लिखवाकर ही वे मंत्री लोग भाषण करते हैं। नेता के ख्याल कभी भी अच्छे नहीं होते। कभी भी समाज के हित में नहीं होते। उन सब में उनके ही सब स्वार्थ बने रहते हैं।

<u>नवाब की अनभिज्ञता</u> :–

नाट्यकला, नृत्यकला या साहित्य कला की सहायता करना सरकारी परंपरा रही है। परंतु "एक था गधा" नाटक के नवाब ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें परंपरा के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं है। परंपरा की जानकारी के बारे में वे पूरी तरह से अपने चिंतकों पर ही निर्भर रहते हैं।

चिन्तक 1 : परम्परा । हुजूर यह होती है और एक बार होती है तो होती चली जाती है।

नवाब : अच्छा, तो चालू रखो। मगर हमें करना क्या है ?[3]

नाटककार शरद जोशी ने यह दिखाया है कि जो राज के नवाब हैं उन्हें असल में सोचना तो बिलकुल नहीं आता। वह हमेशा अपने चिंतकों या नौकरों पर निर्भर रहते हैं। जब वे चिंतक "परम्परा" के बारे में नवाब को बताते हैं तो नवाब कहते हैं – "क्या परा है ?" इसी से ही मालूम पडता है कि नवाब राज्य को कैसे चलाते होंगे। जब परम्परा के बारे में चिन्तक नवाब को समझाते हैं तो नवाब कहते हैं – "अच्छा तो चालू रखो। मगर हमें करना क्या है ?" इससे पता चलता है कि नवाब खुद नहीं सोच सकते, वे चिंतकों पर ही निर्भर हैं। सब चिन्तक असल में हमेशा अपने ही स्वार्थ के लिए सोचते रहते हैं। राजनीति में नेता लोग जब राज्य या समाज के प्रश्न सामने लाते हैं तो अपने कर्मचारियों को उसपर सोचने के लिए कहते हैं और खुद आराम से अपनी कुर्सी पर रज करते हैं। ये नेता लोग हमेशा अपने "पद" के बारे में ही सोचते हैं जनता की, समाज की, राज्य की कभी भी नहीं सोचते। हमेशा अपना स्वार्थ

निकालते रहते हैं। आज के भी नेता लोगों को कुछ कामकाज का महत्त्व मालूम नहीं होता। ये नेता लोग कई कार्यक्रमों में जाकर बड़े लम्बे चौड़े भाषण देते हैं लेकिन नेता लोगों को खुद ही उन वाक्यों के सही माइने में अर्थ नहीं मालूम होते, तो वे दूसरों को क्या अच्छी बाते सीखा देंगे। यही व्यंग्य शरद जोशी ने इस नाटक के द्वारा व्यक्त किया है।

<u>नवाब का नाटक विषयक अज्ञान</u> :-

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब की मूर्खता पर प्रकाश डाला है। जब सूत्रधार को नवाब के सामने लाया जाता है तब नवाब उसकी जानकारी सुनकर उसकी प्रशंसा करते है। चिन्तक – 1 नवाब से कहता है कि सूत्रधार आधुनिक नाटक करता है। तब नवाब झट से अपना अज्ञान दिखाते हैं और कहते हैं, "रोमियो – जूलियट! उसका तर्जुमा पढ़ा था हमने।" असल में नवाब को ये भी नहीं मालूम कि "रोमियो–जूलियट" ये नाटक कोनसे युग के हैं। इसीसे पता चलता है कि नवाब कैसे आदमी हैं। जब चिन्तक – 1 नवाब को सूत्रधार के कुछ नाटक के नाम बता देता है – "आधे–अधूरे", "तुगलक" एवं "इन्दजीत"।[4] तब नवाब को लगता है कि नाटक का नाम बड़ा लम्बा है और नाटक भी लम्बा ही होगा। वास्तव में नाटक के नाम छोटे हैं मगर इस नवाब का कहना है कि नाटक का नाम लम्बा है, तो नाटक भी लम्बा ही होगा। आगे के वाक्य में भी नवाब कितने मूर्ख है यह दिखाई देता है। "मगर देखा जाये, तो बात कितनी सही है। तुगलक ओर इन्द्रजीत सभी आधे–अधूरे हैं। अरे भई, हम बोलेंगे। हम नाटकों पर बोलेंगे। माइक लाओ।"[5] इसमें नाटककार ने बताया है कि जिस आदमी को नाटक के नाम बताकर भी उन्हें मालूम नहीं कि तुगलक, इन्द्रजीत, आधे–अधूरे ये तीन नाटक हैं। नाट्यकला के बारे में नवाब को ऐसा लगता है कि तुगलक और इन्द्रजीत आधे–अधूरे हैं। आज के बड़े नेता, मंत्री आदि लोगों की यही स्थिति है कि उन्हें नाटकों के सही नाम भी मालूम नहीं है लेकिन अपनी पद–प्रतिष्ठा के कारण वे नाटक पर बोलना चाहते हैं और खुद ही व्यंग्य का विषय बन जाते हैं।

नवाब ही भगवान है :-

यह नवाब खुद की प्रशंसा करने की कोशिश में लगातार प्रयत्न करते रहते हैं। राज्य की तरफ, प्रजा की तरफ इनका बिलकुल ध्यान नही है। प्रजा पर क्या बीत रही है यह भी इस नवाब को मालूम नही है। यह नवाब आज के ही नेता, मंत्री का प्रतीक है। इस नाटक के नवाब बड़े ही घमंडी हैं। जब चिन्तकगण उनकी सोच की तारीफ करते हैं तो नवाब कहते हैं कि ऊपरवाले की सिर्फ मुझे ही ऐसा आला-दिमाग देने की इच्छा थी। खुद ऊपरवाले ने ही मुझे ऐसा दिमाग दिया है, वह और किसी को ऐसा दिमाग नही देना चाहता था।[6] मतलब यह कि ऊपरवाले ने ही नवाब को राज्य में नवाब बनकर भिजवा दिया है उन्हें ही सोचने के लिए अला-दिमाग दिया है। इसलिए खुद को वे बड़े समझदार नवाब समझते हैं और लोगों से खुद की प्रशंसा कराते हैं। असल में नवाब झूठ बोलकर ही सब लोगों से खुद को इज्जत देना चाहते हैं। ये चिन्तक भी कहते हैं कि जरूर ऊपरवाले की इच्छा होगी इसलिए आप इतना सोचते हैं। ऐसे कहकर नवाब को झूठी इज्जत देते हैं।

आज राजनीति में भी नवाब जैसे कई नेता लोग है जो खुद को भगवान का रुप मानते हैं। और कहते रहते हैं कि ऊपरवाले ने ही हमें यहाँ राज्य करने के लिए भिजवा दिया है। उनकी ही ख्वाईश है कि हम गरीब लोगों पर राज्य करें। ऐसी झूठी बातें कहकर अपने-आप को भगवान का रुप मानने लगते हैं और यह आम जनता भी उन्हें देवता मानकर उनकी पूजा करती रहती हैं। उन्हें इज्जत देती रहती हैं। जनता के अनुसार नवाब ही भगवान हैं।

नवाब की मनमानी :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में जब नवाब को चिन्तकों द्वारा पता चलता है कि अलादाद खाँ नामक आदमी नहीं एक गधा मर गया है तो नवाब को बहुत गुस्सा आता है। और वे कुछ भी कहने लगते है कि गधा ही क्यों मरा ? आदमी क्यों नहीं मरा। उन्हें लगता है कि हमेशा उनकी ख्वाईश जैसा ही होना चाहिए। वे हमेशा अपनी ही जिद् पर अड़े रहते हैं। नवाब का यह कथन द्रष्टव्य है - "सवाल यह है कि उसने क्यों जगह ली एक

आदमी की जिसे मरना चाहिए या गधे की जगह। कहाँ है अलदाद ?[7] आजकल राजनीति में नवाब जैसे कई लोग है जो खुद को बड़े होशियार समझते हैं। अपनी ही जिद पर अड़े रहते हैं। उन्हें हमेशा ऐसा लगता है कि सारी दुनिया को सिर्फ उनका ही सुनना चाहिए। उनके ही इच्छानुसार राज्य या समाज का काम चलना चाहिये। नवाब जैसे लोग हमेशा अपनी ही जिद पर अड़े रहते हैं और अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। वे लोग अकेले ही राज्य चलाना चाहते हैं खुद को ही वे समाज के अधिकारी समझते हैं। और गरीब लोगों को अपनी ऊँगली पर नचाना चाहते हैं। नाटक में दर्शायी गई नवाब की मनमानी केवल उनकी ही नहीं, सभी सत्ताधारियों की है। अगर सत्ताधारी मनमानी नहीं करेंगे तो और कौन करेंगे? इस पर यह व्यंग्य कसा गया है।

<u>तस्वीर ढोना</u> :-

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में तस्वीर पर भी व्यंग्य किया है। अपने जीवन में तस्वीर का क्या महत्व है और उस तस्वीर को कायम क्यों रखना है इसका भी जिक्र शरद जोशी ने व्यंग्य के सार में बताया है। इस नाटक में नवाब ने खुद ही राजनीति के बारे में जानकारी दी है। नवाब अपने कोतवाल, नौकरों से कहते है कि तुम्हारा काम हैं कि हमेशा मेरी चापलूसी करना, मुझे इज्जत देना, मेरी कुर्सीको सम्भाल लेना और मेरा यही काम है कि आप जैसे गधे लोगों को हमेशा मुझे इज्जत देने के लिए मजबूर करना, जबरदस्ती से काम करवाना और अगर कोई इन्कार करें तो उस विद्रोही को कुचलकर उसे नीचा दिखाना। नवाब के शब्दों में – "सबसे जरूरी है तस्वीर ओर उसका कायम रहना। आदमी बेमानी है, तुम या कोतवाल या अलादाद खाँ या जो भी हो सब गधे हैं जिनका फर्ज है तस्वीर को, हमारे अक्स को ढोना जिसमें उनका फायदा हैं।[8] "तस्वीर ढोना" शब्द–प्रयोग में नवाब की तानाशाही नज़र आती है। 1947 में भारत आजाद हुआ। लेकिन स्वतंत्रता के पचास साल में सही अर्थ में न समाज स्वतंत्र हुआ, न नौकरशाही। आज भी नौकरशाही को कुचला दिया जाता है। आज भी राजनीति नौकरशाही पर हावी हो कई है।

नवाब द्वारा जनता को उल्लू बनाना :-

शरदजी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में लोगों की मूर्खता पर व्यंग्य किया है। आज के जमाने में भी कितने मूर्ख लोग हैं, यह शरद जी ने इस नाटक के द्वारा हमें दिखाया है। इस नाटक के नबाव खुद अपने ही मुँह से कोतवाल और सारे नौकरों को बताते हैं कि वे कैसे लोगों को उल्लू बनाते हैं। नवाब कहते हैं कि कहीं किसी गाँव में बाढ़ आयी है या सूखा पड़ जाता है तो हम वहाँ जाकर, अपने चेहरे को उदास बनाते हैं और बाज मौकों पर दिल में भाव भी पैदा करते हैं और एक चक्कर लगाते हैं। नवाब के शब्दों में – "हम ऐसे मौकों पर यही करते हैं। चेहरे को तो उदास बना ही लेते हैं मगर बाज मौकों पर दिल में भाव भी पैदा कर लेते हैं। जैसे कहीं बाढ़ आयी या सूखा पड़ा तो गये, चेहरे को उदास बनाकर एक चक्कर लगा आये।"[9] तो बस अपना काम हो जाता है। लोगों में हमारी इज्जत और ही बढ़ जाती है। नवाब कहने लगते हैं कि हमारे बुर्जुगों ने कहा है कि हुकूमत चलानी हो तो उसका पहला उसूल है कि आम आदमी को बेवकूफ बनाये रखो। तो तुम आराम से हुकूमत चला सकते हो। नवाब की ये बातें सुनकर सारा दरबार "वाह–वाह" करने लगता है। यही व्यंग्य शरद जी ने बताया है कि ये दरबारी लोग कितने मूर्ख हैं। खुद को उल्लू और बेवकूफ करने के बाद भी ये लोग नवाब की प्रशंसा करते रहते हैं। असल में शरद जी ने नवाब पात्र के जरिये आज के नेता, मंत्री लोगों का चित्रण किया है और दरबारी लोगों के जरिये आम जनता का चित्रण किया है। वह यथार्थ ही लगता है।

सत्ता का दुरूपयोग :-

इस नाटक में शरद जी ने नेता लोग हमेशा अपनी ही स्तुति करने में मशगुल रहते हैं इस पर तीखे व्यंग्य किय हैं। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक के नवाब हमेशा खुद की प्रशंसा करने में ही लगातार मग्न रहते हैं। जनता की सेवा करने में उनका ध्यान नहीं है। इस पर ही शरदजी व्यंग्य कसकर आज की राजनीति का पर्दाफाश करते हैं। नवाब के ही शब्दों में – "... दरअसल हम एक ऐसा नेक और बड़ा काम करना चाहते हैं जिससे पब्लिक अपने ख्वाबों में भी हमारे ही जुलूस देखे और हमारी इज्जत में उनकी गर्दनें सिर मुँडवाते वक्त,

नहाते वक्त, खाना खाते व्क्त गरज यह कि हर वक्त झुकी रहें।"[10] इस नाटक के नवाब हमेशा ही खुद की प्रशंसा करने के लिए उतावले रहते हैं। वे हर काम अपनी प्रासेध्दि के लिए ही करते रहते हैं। वे खुद को बड़े नेक आदमी समझते हैं। इसी नवाब की तरह आज हमारी राजनीति में भी ऐसे कई लोग हैं जो अपनी प्रसिध्दि के लिए ही सब काम करते या बोलते रहते हैं। वे खुद ही कुछ लोगों को उनकी प्रशंसा करने के लिए कहते हैं। ये नेता, मंत्री लोग समाज का कल्याण तो नहीं करते फिर भी ये समाज की ओर से इज्जत पाना चाहते हैं। वास्तव में यह सत्ता का दुरूपयोग ही है।

<u>झूठी कस्में, झूठे वादे</u> :–

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" इस नाटक के द्वारा नेता लोग जनता को कैसे झूठे वादे, आश्वासन देकर उल्लू बनाते हैं। इसका वास्तवादी चित्रण इस नाटक के द्वारा हमारे सामने लाया है। शरद जोशी ने झूठे वादे, आश्वासनों पर व्यंग्य किया है। नवाब जैसे बड़े नेता या अधिकारी या मंत्री आज बड़े बड़े आश्वासन देते हैं। – "और इसके लिए अगर कुछ उल्लू के पठ्ठे को इनाम, फेलोशिप, वगैरा देनी पड़े तो देंगे क्योंकि सवाल तो आखिर हमारे नेक रहमदिल और कलचर्ड लगने का है, वो जो भी हो चलो आगे बढ़ो, एक दिन के लिए लोगों में हमारी इतनी मशहूरी काफी है।"[11] इसमें शरद जोशी ने यह दिखाया है कि यह नवाब खुद को बड़े नेक और रहमदिल आदमी समझते हैं। इस नवाब को खुद की प्रशंसा करने की आदत ही थी। वे सूत्रधार से भी इसी गर्व के साथ बातें करते हैं कि तुम हमारे पास आ जाओ। कलचर का अलग डिपार्टमेंट खुलवाकर दूँगा। ऐसे बड़े–बड़े आश्वासन सूत्रधार को दिए जाते हैं। लेकिन ये सब झूठे वादे हैं क्योंकि नवाब खुद की प्रसिध्दि के लिए ये सब झूठे वादे करते हैं। जैसे आजकल राजनीति में नेता लोग अपनी कुर्सी संभालने के लिए या वोट पाने के लिए जनता को, गरीब लोगों को ऐसे ही बढ़ा–चढ़ाकर झूठ–मूठ के वचन देकर इन भोली जनता से वोट पाते हैं। और अपना स्वार्थ पूरा होने पर वे जनता को कुचल देते हैं। नेता लोगों के आश्वासन पर किया गया यह व्यंग्य स्वातंत्र्योत्तर राजनीति में मंत्रियों द्वारा दिए गए आश्वासनों पर एक संकेत है।

झूठा फर्ज, झूठी शान :-

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में फर्ज पर भी व्यंग्य किया है। नेता लोग समाज के लिए खुद फर्ज नहीं करते परंतु आम जनता को खुद के स्वार्थ के लिए फर्ज करने के लिए मजबूर करते हैं। इस नाटक में शरद जोशी ने यह दिखाया है कि नवाब अपने स्वार्थ के लिये, अपनी इज्जत समाज में बढ़ाने के लिए अलदाद खाँ को मरने के लिए कहते हैं। जब निर्दोष अलादद खाँ मरने को तैयार नहीं होता तो नवाब साहब उसे फर्ज की बातें कहने लगते हैं। खुद तो नवाब साहब कभी फर्ज नहीं निभाते और दूसरें को निभाने के लिए उनपर जबरदस्ती करते हैं। नवाब साहब अलादाद खाँ से कहते हैं कि फर्ज इन्सान को ऊपर उठाते हैं और अपने मुल्क को भी ऊपर उठाते हैं।[12] इसलिए तुम अपनी जान अपने राष्ट्र के लिए दे दो। जब अपने मुल्क पर मुसीबत आ जाती है तो हर आदमी का कर्तव्य होता है कि वह कुर्बानी दे। देशसेवा के लिए सरकार का हुक्म मानना चाहिये। जब सरकार मुसीबत में होती है तब सरकार की मदद करनी ही चाहिये। असल में यहाँ राष्ट्र के लिए कोई कुर्बानी देने के लिए जरुरत नहीं थी। सिर्फ नवाब साहब को कन्धा देने के लिए मुर्दे की जरुरत थी जो वे अलादाद खाँ से पूरी करना चाहते थे। और समाज के सामने खुद की इज्जत बढ़ाना चाहते थे कि एक नवाब होते हुये भी उन्होंने एक गरीब अलादाद खाँ की लाश को कन्धा दिया। नवाब साहब इस कार्य से अपनी तस्वीर चमकाना चाहते थे। शरद जोशी ने इस नाटक में यही कहा है कि नवाब जैसे ऐसे कई लोग आज हैं जो अपनी इज्जत बढ़ाने के लिये किसी निर्दोष आदमी की जान लेते हैं। नवाब जैसे आज के कई लोग गरीब जनता पर जुल्म करते हुए दिखाई देते हैं ओर अपनी हुकूमत सही सलामत रखते हैं। नवाब जैसे सत्तालोलुप लोगों पर शरद जोशी ने तिखा व्यंग्य किया है।

झूठी इज्जत का पर्दाफाश :-

शरद जोशी ने इस नाटक के जरिये आज के नेता लोगों पर व्यंग्य किये हैं। ये नेता लोग खुद की शान बढ़ने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए वे हमेशा जनता को उल्लू बनाने के कोशिश में रहते हैं। शरद जोशी ने नवाब के जरिये आज

के नेता लोगोंपर तीखा व्यंग्य किया हैं। इस नाटक में शरद जोशी ने नवाब के जरिये आज के नेताओं का चित्रण है जो असल में यथार्थवादी ही है। नवाब अपने चिन्तकों को अपना सही रुप बताते हैं। नवाब कहते हैं कि मुझे सिर्फ एक मुर्दा चाहिये क्यों कि मैं उसे कन्धा दूँगा इसलिये नहीं कि मेरे दिल में उसके लिये इज्जत है बल्कि इसलिए कि जब लोग मुझे देखेंगे तब उनके दिल में मेरे लिए इज्जत बढ़े और वे लोग कहेंगे कि क्या नवाब साहब हैं, एक आदमी की, जो बहुत गरीब था, उसकी लाश को नवाब साहब कन्धा दे रहे हैं। नवाब के शब्दों में "एक मुर्दा, सिर्फ एक मुर्दा जिसे मैं कन्धा दूँगा, मैं नवाब इस मुल्क का। सब देखेंगे, कहेंगे, जब देखेंगे तो कहेंगे ही कि नवाब एक आदमी एक साधारण गरीब आदमी की लाश को कन्धा दे रहा है।"[13] ये सब देखकर लोग उनकी प्रशंसा करेंगे। इसलिए नवाब साहब उस लाश को कन्धा देना चाहते हैं। फिर नवाब साहक कहते हैं कि मैं क्या गया था एक अनजान सिपाही के समाधि पर फूल चढाने जो ज्ंग में मर गया था। उस सिपाही के लिए नहीं बल्कि मेरी इज्जत के खातिर गया था। मेरी तस्वीर चमकाने के लिए गया था। मेरी हुकूमत सही सलामत रखने के लिये ही मैं यह सब नाटक करता रहता हूँ। वे यहभी कहते हैं कि जब गाँव में सूखा, बाढ़ आती है तो मैं कम्बल बाँटने के लिएजाता था तब करूणा के भाव से नहीं बल्कि मेरी शान के लिये। अस्पताल में फल बाँटता हूँ, स्कूलों में इनाम–इकराम बच्चों को देता हूँ ये सब मैं तुम्हारे लिये नहीं करता सिर्फ मेरी खातिर करता हूँ। मेरी मशहूरी के लिए करता हूँ। मेरी हुकूमत कायम रखने के लिये ही करता हूँ। किसी इतिहास, साहित्य, दर्शन के लिए नहीं करता हूँ ओर तुम जैसे उल्लू के पठ्ठों के लिए भी नहीं करता हूँ। सिर्फ मेरे लिऐ करता हूँ मेरे अधिकार के लिए करता हूँ। मेरी कुर्सी के अधिकार के लिए करता हूँ। यहाँ नाटककार ने आज के नेताओं की झूठी इज्जत का ही पर्दाफाश किया है, और विशेष बात यह है कि यह रहस्य उन्होंने नवाब या नेताओं के मुख से खोल दिया है।

<u>वाह रे स्मारक, वाह री इज्जत</u> :-

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक के द्वारा स्मारक पर भी व्यंग्य किया है। आज के लोग कोई भला आदमी मर जाने के बाद उसकी याद में स्मारक खडा करते हैं, असल में वह उसकी याद में नहीं खड़ा करते, खुद की प्रसिध्दि के लिए वह स्मारक खड़ा करते हैं, खुद के हाथ से उसका उद्घाटन करते हैं। नवाब साहब अलादाद खाँ को मरने के लिए मजबूर करते हैं ओर कहते हैं कि तुम्हें एक लाश बनाना चाहिये। तब हम तुम्हारी लाश को कन्धा देंगे, सारी दुनिया देखेगी कि एक नवाब गरीब अलादाद खाँ की लाश को कन्धा दे रहे हैं। तुम सारी जनता में एक खबर बनोगे। तुम्हारा स्मारक खड़ा होगा, तुम्हारे नाम पर बाग, युनिवर्सिटी सब कुछ होगी। सारे आदमी तुम पर नाझ करेंगे। इसलिए तुम मरने के लिए तैयार हो जाओ। तेरे मरने के बाद हम तुम्हारी बेवा को पेन्शन देंगे। और कोतवाल को कहते हैं कि जल्लाद से कहो कि अलादाद खाँ को जो मामूली है उसे महान अलादाद खाँ बना दो। ऐसे कई आदमी हैं कि ऐसी किस्मत पाने के लिये जिन्दगी भर कोशिश करते हैं। यह सब किस्मत वालों को ही मिलता है। और तुम ही वह किस्मतवाले हो अलादाद खाँ कि तुम्हारी लाश को एक नवाब कन्धा देंगे। नवाब के शब्दों में "हम तुम्हारी लाश को कन्धा देंगे अलादाद, यह सम्मान हर किसी को नहीं मिलता। कल तुम एक खबर बनोगे खबर, तुम्हारा स्मारक खड़ा होगा। तुम्हारे नाम पर सड़क, बाग, युनिवर्सिटी... साले आम आदमी, इससे ज्यादा तुझे चाहिए क्या।[14] तुम्हारी लाश देखने के लिए लोगों की भीड़ लगी है। यह नवाब साहब खुद को भगवान समझते हैं। वे कहते हैं मैं एक नवाब होकर मामूली आदमी के लाश को कन्धा दूँगा तो वह आदमी समझते हैं असल में जनता के दिल में उनके लिये कोई इज्जत नहीं है। फिर भी यह नवाब खुद की झूठी शान के लिए एक निर्दोष, बेकसूर आदमी की जान लेते हैं और उसकी लाश को कन्धा देकर समाज में खुद को प्रतिष्ठा देने की कोशिश करते हैं। लोगों के दिल में जगह बनाना चाहते हैं। आज हमारे देश में कई ऐसे स्मारक भी होंगे जिनमें तानाशाह की मर्जी के कारण अपने प्राण गँवाने पड़े होंगे और तानाशाह की इज्जत बढ़ाने के लिए ही स्मारक बनवा रहे होंगे। वाह रे स्मारक, वाह री इज्जत!

<u>कर्तव्य से विमुखता</u> :-

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक के द्वारा आज के कोतवाल लोगों पर व्यंग्य किया है, जो यथार्थवादी ही है। नाटककार ने यह दिखाया है कि सरकारी अफसर लोग कैसे अपना समय फालतू कामो में गँवा करते हैं। यहाँ कोतवाल नाचनेवाली के कोठे पर छह-छह घण्टे रहता है। उसका नाम हैं - रामकली।

कोतवाल : नौकरी है रामकली, नौकरी !

रामकली : राख डालो ऐसी नौकरी पर। हमारी जवानी तुम्हारा इन्तजार करते बीत जायेगी क्या ?

कोतवाल : हम पिछले छह घण्टों से तुम्हारे साथ हैं।[15]

कोतवाल हमेशा रामकली के कोठे पर ही अपना अधिकतम समय बिताता है। नृत्यंगना रामकली के आगे-पीछे करता है। वहाँ बैठकर शराब पीता है। उस पर अपना पैसा, सबकुछ निछावर करता है। असल में कोतवाल का काम है शहर के या राज्य के लोगों की मदद करना। जनता की रक्षा करना लेकिन यह कोतवाल तो काम के नाम पर कोई दूसरा ही काम करता रहता है। पुलिस होकर भी वह अपनी नौकरी ठीक तरह सेनहीं करता है। कोतवाल रामकली के प्यार में बस पागल ही हो जाता है। उसे अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहना चाहिये था मगर कोतवाल, कई घण्टें रामकली के यहाँ ही बिताता है।

हमारे देश में आज बिलकुल ऐसे ही स्थिति दिखाई देती है। कोतवाल जैसे कई सरकारी अधिकारी हैं जो अपना कर्तव्य नहीं निभाते, बल्कि फालतू कामों में अपना वक्त जाया करते हैं। ऐसे ही कोठे पे जाकर शराब पीकर अपने कर्तव्य से हट जाते हैं और समाज में गंदगी फैलाते हैं। खुद को बड़े इज्जतदार समझते हैं। समाज के लिए कुछ करते नहीं सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए, मौज के लिए ही मह हमेशा काम के नाम पर समय बरबाद करते रहते हैं। यहाँ नाटककार ने बताया है कि पुलिस लोग हमेशा आम जनता को गालियाँ देने का ही काम करते हैं। गालियाँ देने के सिवाय उन्हें कुछ आता ही नहीं। यह खुद ही उन्हें मालूम है। रामकली कोतवाल को रूक जाने को कहती है तो कोतवाल कहता है कि सारा शहर हमारा

इन्तजार कर रहा है। ऐसे कई घण्टों के बाद कोतवाल को अपना कर्तव्य या काम याद आता है। इस नाटक में नाटककार ने आज के पुलिस अधिकारियों पर तिखा व्यंग्य किया है। कोतवाल जैसे ऐसे कई अफसर हैं जो काम के नाम पर मौज–मस्ती करते रहते हैं। अपना समय बरबाद करते रहते हैं। कोई भी पुलिसवाला अपना काम सिर्फ दूसरों को गालियाँ देना ही समझता है। ये पुलिसवाले हमेशा जनता के साथ गंदी–गंदी बातें करते हैं। अपने आधिकार का फायदा उठाते रहते हैं। अपनी ड्यूटी का समय कहीं पर भी गँवाते हैं। आज की नौकरशाही पर यह करारा व्यंग्य है।

<u>अधिकार का दुरूपयोग</u> :–

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में पुलिसों के गैरव्यवहार पर तीखा व्यंग्य किया है जो धार्मिक और यथार्थवादी ही है। आज समाज में जो पुलिसों का वर्ग है वह सचमुच ही समाज की रक्षा के नाम पर उन्हीं समाज के लोगों को लूट रहा है। समाज का रक्षण करने के बजाय उन्हें ही पुलिस असुरक्षित कर रही है। पुलिसों का जनता के साथ व्यवहार अच्छा नहीं हैं। पुलिस लोगों के साथ गुंड़े जैसा ही व्यवहार करती रहती है। जनता को लूटना ही उनका काम है।यथा –

देवीलाल : खा गये पान फोकट का।

नत्थू : कोतवाल ठहरे भाई।

देवीलाल : रोज का सिलसिला हो गया है। यहाँ खा लिया और जब मर्जी हुई हवालदार को भेज थाने पर बुलवा लिये।

नत्थू : हमसे पतलून रफू करवाया था, उसके पैसे भी कहाँ दिये ?[16]

जब कोतवाल घोड़े पर सवार होकर बाजार में जाता हैं, तब सब लोग कोतवाल को सलाम करते हैं। नत्थू दर्जी भी उसे सलाम करता है। देवीलाल पानवाला कोतवाल को पान पेश करता है। कोतवाल बड़े शान से इधर–उधर देखकर सलामी लेते हुये रौब दिखाकर जाता है। कोतवाल के पीछे यही सलाम करनेवाले लोग उसकी बुराई करने लगते हैं। देवीलाल नत्थू दर्जी से कहता है कि "खा गये पान फोकट का।" नत्थू दर्जी कहता है कि वह कोतवाल है तो ऐसा ही चलता

रहेगा। सबको उसके नखरे पूरे करने पड़ेंगे। देवीलाल तो कोतवाल से तंग आया था क्योंकि रोज कोतवाल उसका पान फोकट में ही खाता था और फिर खुद का काम होने पर भी वह देवीलाल को ही थाने पर बुलवाया करता है।

नत्थू दर्जी से भी कोतवाल ने पतलून रफू करके ली थी। उसका पैसा अभी तक कोतवाल ने नहीं दिया हैं। इसी तरह नत्थू और देवीलाल जैसे कई लोग कोतवाल के बर्ताव से तंग आते है। आज भी समाज में ऐसे दृश्य दिखाई देते हैं। बड़े–बड़े सरकारी अफसर लोग सभी से फोकट में चीजे लेते रहते हैं। खुद तो उनका काम नहीं करते फिर भी वे लोग अपने अधिकार का गलत इस्तेमाल करते हैं और आम गरीब जनता को लूटते रहते हैं। और अपनी जेब भरते दिखाई देते हैं।

<u>रक्षक ही भक्षक हैं</u> :–

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक के द्वारा नेता लोगों से गरीबों का शोषण कैसा होता है इसका मार्मिक चित्रण इसमें किया है। जब नवाब को पता चलता है कि चिन्तक – 3 को नवाब के बेहतर नवाब होने पर शक था तब नवाब साहब बहुत गुस्सा करते हैं और कोतवाल को चिन्तक–3 का सर कलम करने की आज्ञा देते हैं। जब चिन्तक – 3 उनसे माफी माँगता है तो नवाब उसे माफी नहीं देते बल्कि उसकी छोटी–सी गलती के लिए उसे मौत की सजा फर्माते हैं। कोतवाल, इसका सर कलम किया जाये। फौरन कलम। जरुरत नहीं है हमें ऐसे सोचने–समझनवालों की। जरुरत नहीं है जिनके दिमाग में हमारे खिलाफ बातें आये।[17] आज भी राजनीति में कोई भी आदमी जब सच बोलने के लिए आवाज उठाता है, तो उसे खत्म किया जाताहै। उसकी आवाज हमेशा के लिए बंद की जाती है। आज सच का कोई महत्व नहीं रहा है। इन्साफ किसी को भी नहीं मिलता। जो झूठ होता है उसी को न्याय मिल जाता है। वास्तव में नवाब अपने हित के लिए ही चिंतकों की नियुक्ति करते हैं। उन्हें प्रतिष्ठा दिखाता हैं। लेकिन असल में बात यह है कि अगर कोई चिंतक नवाब के खिलाफ बोलता है या उसके बेहतर होने में शक पैदा करता है तो नवाब जैसे रक्षक ही चिंतकों के भक्षक बन जाते हैं। एक तरह से नवाब की यह तानाशाही ही है।

रिश्वतखोरी :–

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक द्वारा नाटककार ने पुलिसों की रिश्वतखोरी पर व्यंग्य किया है। नाटककार ने यह दिखाया है कि हमारे देश के पुलिस लोग रिश्वतखोर ही होते हैं, सालों से ये रिश्वत लेने और देने की प्रथा चली आ रही है। आज भी हमारे देश के पुलिस डिपार्टमेंट के कई लोग इस कोतवाल की तरह ही रिश्वत लेनेवाले नजर आते हैं। पुलिस विभाग में जब किसी को कैसा भी काम होता है तो ये पुलिसवाले लोग कभी भी कर्तव्य के रुप में काम नहीं करते। हालाकि उनकी नौकरी यही होती है कि वे लोगों की सेवा करें, सरकार उन्हें तनख्याह भी अच्छी देती है। उन्हें रहने के लिए घर सबकुछ होते हुये भी ये पुलिस विभाग के लोग आम गरीब जनता से रिश्वत माँग कर, रिश्वत लेकर ही उनका काम करते हैं। गरीब लोगों को लूटकर ये पुलिसवाले अपनी जेबें भर देते हैं।

इस नाटक का कोतवाल भी रिश्वत लेकर ही अमीर बना है। वह सभी से रिश्वत लेता है ओर नाचनेवाली रामकली पर अपनी जेब निछावर कर देता है। कोतवाल की रिश्वतखोरी कोतवाल के ही शब्दों में देखी जा सकती है – "हमारी मान जाओ रामकली। देखो रिश्वत का जितना रुपया हमें मिला सो हमने तुम्हें दे दिया। जेवरों का डिब्बा भी सँभाल लो, कीमती हैं।"[18] ऐसे ही आज के पुलिस गरीब लोगों से जबरदस्ती से पैसे वसूल करते है और नाचनेवाली नारियों पर, वेश्याओं पर अपना पैसा खर्च करते हैं और कीमती समय भी खर्च करते हैं। इसी तरह "शरद जोशी" ने एक था गधा उर्फ अलदाद खाँ" नाटक में पुलिसों पर तीखा व्यंग्य किया है और समाज में सुधार लाने की कोशिश की है। नाटककार ने इस व्यंग्य के द्वारा आम जनता की आँखें खोलने का प्रयत्न किया है।

शिकायती राज :–

कोतवाल को उसके गलत व्यवहार करने के कारण दरबार में उसके ज्यादा दुश्मन ही थे। कोतवाल अपनी ड्यूटी पर हमेशा देरी से आता है। कोतवाल के दुश्मन तो नवाब से शिकायत करने की कोशिश हमेशा करते हैं। कोतवाल के शब्दों में – अब हमें जाने दो। दरबार में बहुत दुश्मन हैं। शिकायत लगाते देरी नहीं करेंगे कि कोतवाल अपनी ड्यूटी पर देरी से आता

है। सदर थाने जाता हैं, फिर सुसरी आज शाम जरुरी बैठक है। कहीं देरी न लग जाये।[19] आज भी हमारे यहाँ किसी भी कार्यालय या सरकारी दफ्तरों में भी ऐसी स्थिति दिखाई देती है। कोतवाल जैसे लोगों के दुश्मन हमेशा उनकी शिकायत करने की आस लगाये बैठते हैं। और बाकी आने पर अपनी दिल की भड़ास ये लोग पूरी करते है। सिफारिश करनेवाले लोगों के तो दुश्मन ज्यादा होते हैं। क्योंकि सिफारिश किए हुए लोगों के कारण ही नेकआदमियों पर नाइन्साफी होती है। इसलिए कोतवाल जैसे लोगों के दुश्मन चारों ओर बढ़ते ही रहेंगे। आज के पुलिस लोग भी इस कोतवाल की तरह ही मूर्ख होते हैं। एखाद दूसरा ही होशियार होता है। आजकल पुलिस भरती में भी वशीलेबाजी होती रहती है। तो कोई होशियार या नेक इन्सान को नहीं लिया जाता। कुछ लोग तो कम पढ़े हो तो भी उसे नौकरी में लिया जाता हैं। क्योंकि उनकी जान पहचान रहती है, उनकी सिफारिश करनेवाला कोई रहता है। असल में वे उस नौकरी के लिए काबिल भी नहीं होते तो भी सरकार उन्हें नौकरी पर लेती हैं क्योंकि उन लोंगों के कोई न कोई रिश्तेदार उस नौकरी में रहते हैं या वे लोग बड़े अफसरों को रिश्वत देकर नौकरी को खरीदते हैं। शरद जोशी ने यही दिखाया है कि कोतवाल भी असल में उस नौकरी के काबिल नहीं है। पर वह हमेशा नवाब की चापलूसी करता रहता है। इसलिए कोतवाल कभी भी अपना काम मन लगाकर नहीं करता बल्कि अपनी नौकरी का गलत इस्तेमाल करता रहता है। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए –

रामकली : इन पढ़े–लिखे मुँओं को दूसरा काम क्या है।

कोतवाल : तुम जानती हो हम चौथे दर्जा से आगे कभी पढ़े नहीं । कोई हमसे प्रश्न करता है तो मुसकाय के रह जाते हैं।[20]

सब जनता कोतवाल से तंग आती है।

कोतवाल हमेशा देवीलाल की दुकान से फोकट का पान खाता है। कभी पान के पैसे नहीं देता। सूत्रधार को भी बार–बार कोवातल को फोकट का नाटक दिखाना पड़ता है। उन्हें चाय–वाय पिलानी पड़ती हैं क्योंकि कोतवाल नवाब के यहाँ नोकरी करता है। आगे किसी भी काम आ जायेगा इसलिए सब लोग कोतवाल की चापलूसी करते हैं। रामकली और कोतवाल के संवादों से

पता चल जाता है कि कोतवाल किस काबिल का आदमी है। खुद कोतवाल को भीयह सब मालूम है कि वह इस नौकरी के काबिलनहीं है।

<u>चिन्तकों पर व्यंग्य</u> :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में शरद जोशी ने यह बताया है कि आदमी को अपनी खुद की विचार शक्ति होने के बावजूद वह आदमी दूसरे आदमी का सुनकर अपना कोई भी काम करता है, अगर वह काम सीधा हो तो भी या कठिन हो तो भी, वह दूसरों को सोचने के लिए कहता है। वह खुद सोच ही नहीं सकता उसे हमेशा दूसरों का सहारा लेना पड़ता है। ऐसे लोग जिंदगी में कभी भी तरक्की नहीं कर पाते।

राजनीति में ऐसा चित्र चारों ओर दिखाई देता है। उदा. के तोर पर देखा जाए तो प्रधानमंत्री या कोई भी नेता लोग उनके सामने कोई प्रश्न या सवाल आते हैं तो वे अपने पी.ए. या कार्यकर्ताओं को इस सवाल का जवाब ढूँढने के लिए कहते हैं, उस पर सोचने के लिए कहते हैं। खुद सोचते नहीं। खुद की बुध्दि इस्तेमाल नहीं करते। तो ऐसे लोग क्या सचमुच समाज को सुधार देंगे? आजकल राजनीति में चिंतकों का बडा बोलबाला दिखाई देता है। जब किसी समस्या के बारे में पूछता है तो राजनीति में नेता–गण सर्वप्रथम चिंतकों से ही विचार–विमर्श करते हैं। लेकिन आजकल के चिंतक ऐसे हैं जो चिंतक कम ओर आश्रयदाता की खुशामद करने में जुटे रहते हैं। चिंतकों की हमेशा यह धारणा रही है कि अन्नदाता जिस समस्या पर हुक्म करे, वे उसपर ही चिंतन करते हैं।[21]

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में दर्शाया गया है कि नवाब खुद सोच नहीं सकता है बल्कि सवालों के जवाब ढूँढने के लिए अपने दरबार में चिंतकों को रखता है। ये तीनों ही चिंतक अपनी रोजी–रोटी कमाने के लिए नवाब के समस्या पर सोचते रहते हैं, उन पर चिंतन करते रहते है। कभी उन्हें मूर्ख भी कहते हैं। इन तीनों को हमेशा नवाब की आज्ञा का पालन करना पड़ता है। ये तीनों चिंतक किसी भी समस्या पर चिंतन करते रहते हैं जो नवाबों की दृष्टि समस्या हो। आज के नेता स्वयं किसी भी समस्या पर गंभीरता के साथ नहीं सोचते। अपने चिंतकों पर निर्भर रहते हैं। नेताओं को खुश रखना ही आज के चिंतकों का

कर्तव्य बन गया है। मूल चिंतन को वे भूल जाते हैं। भारत चिंतन प्रधान देश है, परंतु आज कल सब ओर चिंतन का अभाव ही खटकता है।

दबाव तंत्र :-

शरदजी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" में दबाव का तंत्र किस प्रकार होता है, इस पर व्यंग्य किया है। उदा.

सूत्रधार : ... मैं चाहता हूँ सरकार बीच में नहीं आये मगर मदद करना चाहती है तो ठीक है, वी डोंट माइण्ड। खैर, जो भी हो, एक बात साफ है कि अगर मैं मदद लूँगा तो अपनी शर्तों पर लूँगा, अगर वे शर्तें कौन-सी हों, इस पर बातचीत की जा सकती है।[22]

उपर्युक्त संदर्भ में शरदजी ने जो कुछ भी व्यंग्य दिखाये हैं ये सब आज के समाज का ही सच्चा चित्रण है। सच में नवाब जैसे ऐसे कई लोग हैं जो सत्ता का यश पाने के लिए सूत्रधार जैसे लोगों की मदद करते हैं ओर अपनी जय-जयकार कराते हैं। उन्हें अपने जाल में फँसाते हैं। और "ना - ना" करते करते सूत्रधार जैसे नेक लोग भी आखिर में नवाब जैसे लोगों के सामने वश हो जाते हैं। सूत्रधार जैसे लोग तो पहले बड़ी बड़ी बातें करते हैं। समाज को सुधारने के लिए ही अपना कार्य करते रहते थे लेकिन जब वे सरकार के दबाव के नीचे आते हैं तो फिर सब कुछ समाज के हित के बारे में भूल जाते हैं ओर आगे सरकार की मर्जी से ही कार्यरत रहते हैं। स्वयं सूत्रधार कहता है - "मैं चाहता हूँ सूत्रधार पहले एक नेक इन्सान था। समाज सुधार उसका ध्येय था। सूत्रधार कहता है कि नवाब जैसे नेता लोग हमेशा सत्ता के लालच के लिए हम जैसे गरीब लोगों को खरीदते हैं, हमें आश्वासन देकर, हमसे जय जयकार पाना चाहते हैं। सूत्रधार कहता है कि नवाब मुझे मदद करेंगे, फेलोशिप देंगे, कल्चर का डिपार्टमेंट खोल देंगे। ये सब मेरे खातिर नहीं बल्कि अपनी सत्ता पाने के लिए ही नवाब साहब ये तकलीफें कर रहे हैं। सूत्रधार को समझ में नहीं आता की वह नवाब से मदद ले या न ले। यहाँ सूत्रधार की "हॅम्लेट" की तरह To be or not to be जैसी स्थिति होती है।

सूत्रधार को तो थियेटर करना है उसे ये भी मालूम है कि अगर अब नवाब से मदद ली तो बाद में नवाब जैसा कहेंगे वैसे ही सूत्रधार को नाटक खेलने पड़ेंगे। लेकिन सूत्रधार नेक इन्सान की तरह कहता है कि मैं नवाब से मदद लूँगा, गवर्नमेंट मदद करना चाहती है तो मदद लूँगा। लेकिन मैं अपने सांस्कृतिक मामलों में गवर्नमेंट को दखलअन्दाजी नहीं करने दूँगा। लेकिन सूत्रधार का यह विचार केवल विचार ही रहा है। सरकारी दबाव–तंत्र में से बाहर निकलना बड़ी जोखीम की बात है।

शरद जी ने यहाँ सूत्रधार के जरिए आज के जरुरतमंद मानव का चित्रण किया है। आज भी ऐसे कई लोग है जो सूत्रधार की तरह सरकार के दबाव में नहीं आना चाहते। सरकार की मदद नहीं लेना चाहते। नवाब जैसे ऐसे कई नेता, मंत्री है कि वे खुद के स्वार्थ के लिए, सत्ता के लिए सूत्रधार जैसे लोगों को खरीदने की कोशिश में रहते हैं। लेकिन अंत में सूत्रधार जैसे लोग नेता लोगों के सामने वश हो जाते हैं। आर्थिक परिस्थिति के लिए, अपनी रोजी–रोटी के लिए वे मजबूर हो जाते हैं। सरकारी दबाव–तंत्र का यही नतीजा है।

<u>नवाब की चापलूसी</u> :–

जब नवाब सूत्रधार पर मेहरबानी करता है तब सब नागरिक सूत्रधार को बधाई देते हैं। और सब नागरिक एक–दूसरे के साथ बात–चीत करने लगते हैं। सूत्रधार को रोटी के साथ यानी थियेटर के साथ–साथ मशहूरी भी हासिल हुई है। कोतवाल की खुशामद करने से ही सूत्रधार थियेटर प्राप्त करने में कामयाब होते हैं।

नागरिक – 3 : बधाई जनाब, इसे कहते हैं खुदा जब देता है थियेटर फाड़कर देता है। टूटने दीजिए थियेटर, मगर खुदा की नियामत पर नजर रखिए।

नागरिक – 1 : कोतवाल को मक्खन लगाना आखिर काम आया। बधाई हो।

नागरिक – 2 : क्यों नहीं, अरे भाई, अगर आगे बढ़ना है, जिन्दगी में प्रगति करनी है तो अफसरों से चिपककर रहो, कामयाबी कहीं नहीं जाती। बधाई प्यारे।[23]

यहाँ शरद जोशी ने यही दिखाने की कोशिश की है कि जब किसी पर सरकार की मेहरबानी हो जाय तो सूत्रधार जैसे लोगों को आगे खुद की मर्जी छोड़कर अब सरकार की मर्जी जैसा बर्ताव

करना पड़ेगा। खुद का नुकसान जो भी हो लेकिन सरकार की नियामत पर नजर रखनी चाहिए। कोतवाल को मक्खन लगाना आखिर काम आया। इसी तरह आज भी हमारे देश में ऐसा ही सब चल रहा है। बिना मक्खन लगाने किसी का स्वार्थ पूरा नहीं हो सकता।

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में दरबारियों के माध्यम से समाज में किस तरह लोग नेता या मंत्री या अफसर लोगों की चापलूसी करते हैं और अपने काम पूरे करने की कोशिश में लगे रहते है। दरबारी हमेशा नवाब के गुण गाते रहते हैं। दरअसल वे गुण नवाब के दोष ही हैं। जब नवाब कहते हैं कि – "हम नाटकों पर बोलेंगे।" तो दरबारी लोग नवाब के बोलने से पहले ही नवाब के गुणगान करने लगते हैं।

दरबारी – 3 : नवाब साहब की भाषा बहुत सुन्दर है और प्रभावशाली ।

दरबारी – 4 : विचार कितने ऊँचे है। सुनिए–सुनिए, नवाब साहब को सुनिए।[24]

ऐसी तरह–तरह की बातें बोलकर ये दरबारी लोग नवाब को हमेशा चने के पेड़ पर बिठाने की कोशिश करते हैं। और उसमें ये दरबारी लोग जीत भी जाते हैं। नवाब को भी ये सुनकर ऐसा लगता है कि वे सच में ही अच्छा भाषण देते हैं। और जब नवाब बोलने लगते हैं तब उस भाषण में नाटक के बारे में कम बोलते हैं। और कुछ दूसरे ही विषय पर बोलने लगते हैं, जिससे समाज को कुछ फायदा ही नहीं है। उस भाषण में समाज के कुछ हित की बातें भी नहीं थी। नवाब के भाषण में तो कुछ ज्ञान की गहरी बातें भी नहीं थी। उनकी भाषा भी सुन्दर और प्रभावशाली नहीं थी। उनके विचार भी ऊँचे नहीं थे फिर भी दरबारी लोग अपने स्वार्थ के लिए, अपनी नौकरी बचाए रखने के लिए, अपने पद बढ़ाने के लिए झूठ–मूठ नवाब की प्रशंसा करते हैं। और हमेशा एक–दूसरे की हाँ में हाँ मिलाते रहते हैं। राज–दरबार हो या प्रशासन–कार्यालय .., आज सभी ओर दरबारी या नौकरों द्वारा अपने अधिकारी वर्ग की चापलूसी करना ही उनका कर्तव्य बन गया है, मूल कर्तव्य की ओर उनका ध्यान बिलकुल नहीं है।

सिफारिश का तरीका :–

नाटककार ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में सिफारिश के तरीके पर भी व्यंग्य किया है। आज राजनीति में सिफारिश का इतना महत्त्व बढ़ गया है कि बिना सिफारिश के किसी का काम हो ही नहीं सकता। किसी को अपना काम करवाना है तो सिफारिश के लिए छोटे–मोटे अफ़सरों या अधिकारियों के पास जाकर, उन्हे खुष रखकर ही सिफारिश करवा कर अपना उल्लू सीधा करना पड़ता है। दो नागरिकों के आपसी बातचीत से सूत्रधार की की गई सिफारिश पर प्रकाश पड़ता है।

नागरिक – 2 : अब तो सरकार की मर्जी के नाटक करेगा, क्योंके आखिर नमक कहीं–न–कहीं तो बोलेगा ही ।

नागरिक – 3 : जाहिर है बोलेगा और बोलना चाहिए, मगर अब करें भी क्या ।"[25]

नाटककार ने यही दिखाया है कि सूत्रधार जैसे कई लोग हैं जो अपना काम पूरा करने के लिए या अपने स्वार्थ के लिए नेता लोगों के पी.ए., नेताओं के चमचे जो होते हैं, उनके पास जाकर सिफारिश करवाने की कोशिश करते रहते हैं। हमेशा उनके आगे–पीछे रहते हैं। ऐसे लोग हमेशा सरकारी की मर्जी संभालकर अपना स्वार्थ पूरा करने की कोशिश में लगे रहते हैं। नेताओं के पी.ए. या चमचे की वजह से सूत्रधार जैसे लोगों की सिफारिश हो जाती है। तब ऐसे लोगों पर सरकार का एहसान होने के कारण वे हमेशा सरकार की मर्जी संभालने की कोशिश में लगे रहते हैं। ये लोग सरकार के मर्जी के खिलाफ जाते ही नहीं। ऐसे लोग आगे के सब काम सरकार की मर्जी से ही करते हैं, सरकार जो कुछ भी करने को कहेगी, वही ये लोग करते रहते हैं ओर आगे भी करते ही रहेंगे। ऐसी इन स्वार्थी लोगों की आदत रहती है।

नाटककार ने यह दिखाया है कि आखिर में सूत्रधार का कोतवाल के यहाँ बरसों से चप्पलें घिसना आखिर काम आता है। सूत्रधार हमेशा कोतवाल को पान खिलाता रहता है, हमेशा कोतवाल को नाटक के फ्री पास देता है। थियेटर में नाटक देखने के लिए हमेशा जगह देता है यह सब सूत्रधार इसलिए करता था कि कोतवाल नवाब के यहाँ काम करता था। सूत्रधार कोतवाल के जरिए नवाब से सिफारिश करना चाहता था। आज भी हमारे देश में

सूत्रधार जैसे कई लोग हैं जो नेताओं के, मंत्रियों के नौकर वर्ग के लोगों को सिफारिश करने के लिए कहते हैं। उनकी चापलूसी करते हैं। सिफारिश का यह तरीका एक तरह से भ्रष्टाचार का ही अलग रुप है। नाटक में यही दिखाया है कि सूत्रधार की चप्पलें घिसने की तपश्चर्या, कितने दिनों बाद पूरी हो जाती है। आखिर कोतवाल की सिफारिश से ही नवाब सूत्रधार को थियेटर देने की बात करते हैं।

<u>अंधी राजनीति</u> :-

शरद जोशी ने "अन्धों का हाथी" नाटक में पशु-प्रतीक के माध्यम से राजनीति के क्षेत्र में जो अंधापन दिखाई देता है, उसको व्यंग्यात्मक रुप में प्रस्तुत कर सबकी आँखें खोल देने का एक स्तुत्य प्रयास किया है। "अंधो का हाथी" नाटक में नाटककार ने राजनीति में जो नेता लोग रहते है उस पर तीखा व्यंग्य किया है। इस नाटक के अंधे यानी ये सब राजनीति के ही नेता लोग हैं। ये नेता लोग अंधे होकर कामकाज करते हैं। उन्हें सबकुछ दिखाई देता है, समाज में जो हलचल मच रही है, जो अन्याय गरीबों पर हो रहे है, इन सब की खबर नेता लोगों को होती है, मगर उसकी और वे नेता लोग अनदेखा करते हैं और जानबूझकर ध्यान नहीं देते है। जो ऐसे अंधे नेताओं के पास राजनीति का सब कारोबार रहता है और वह संभालने के लिए जो लोग रहते है वे भी अंधे ही होते हैं। नेता लोग राजनीति की पार्टियों में काम करने के लिए अपने ही आदमी याने चमचे रखते हैं। ये चमचे अपने मालिक के ही गुलाम रहते हैं, जैसा मालिक कहेगा वैसा ही नौकर काम करेगा। ऐसी नीति वहाँ पार्टियों में चली रहती है। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए -

अन्धा - 1 : हम अन्धों ने अपने स्टाफ में और अन्धों को रख दिया।

अन्धा - 2 : और उन अन्धों को यह अधिकार दिया कि वे और अन्धे नियुक्त कर लें जिससे कार्य सुचारु रुप से चले।

अन्धा - 3 : और वह चल रहा है। चपरासी।[26]

इस प्रकार शरद जोशी ने हमें दिखाया है कि राजनीति में कैसा काम चलता है। कैसे लोग अन्धे बनकर काम करते हैं, ये नेता लोग अन्धे बनकर गरीब जनता पर अन्याय करते हैं। उनकी

समस्याएँ दूर करने के बजाए उनपर ज्यादा समस्याओं का बोझ डालते हैं। उनके दु:ख कम करने के बजाय उन लोगों को ज्यादा ही दुखी बनाते हैं। वस्तुत: यह आजकल की अंधी राजनीति ही है।

<u>कार्यालय में अंधी राजनीति</u> :-

शरद जोशी ने "अंधो का हाथी" नाटक में कार्यालय में चलनेवाली अंधी राजनीति पर व्यंग्य किया है। आज कार्यालय के लोग ठीक ढंग से काम करते नहीं और जो भी कुछ काम करते हैं वह रिश्वत लेकर ही करते हैं। इस नाटक में नाटककार ने यह बताया है कि सरकारी दफ्तरों में भी राजनीति चलती रहती है। जनता को फंसाने के लिए एक समस्या को, अनेक समस्याओं के रुप देकर जनता के सामने खड़ा करते हैं। सरकारी दफ्तरों में एक ही समस्या को बारबार दोहराकर उसे अनेक समस्याओं में शामिल किया जाता है। जो दफ्तर में एखाद अफसर प्रामाणिक होता है या समाज का कोई सच्चा नागरिक होता है जो इस झूठ को सह नहीं पाता है। और बाद में उस मामले को सुप्रीम कोर्ट में ले जाने के लिए प्रयत्न करता है।[27] नाटककार ने यह दिखाया है कि आजकल सरकारी दफ्तरों में भी ज्यादा राजनीति चल रही है। सरकारी कामकाजों में राजनीति बीच-बीच में घुसी जा रही है। सरकारी कामों में अब झूठ ही को ज्यादा महत्व प्राप्त हुआ है। सरकारी दफ्तरों में अब कभी-कभी सच्चाई पर झूठ ने विजय प्राप्त की है ऐसा दिखाई देता है।

सरकारी दफ्तरों में जो काम करनेवाले अफसर, क्लर्क, सिपाई हैं वे सब काम करने के लिए किसी न किसी प्रकार की रिश्वत लेते रहते हैं। नाटककार ने यहाँ कानून का अधिकार हमें बताया है। साधारण व्यक्ति का कोई काम नहीं हुआ या उसपर समाज ने कोई अन्याय किया तो वह न्याय प्राप्ति के लिए कानून के पास या कोर्ट में जाकर अपना अधिकार जता सकता है। लेकिन कानून, कानून है उसे भूला नहीं जा सकता। कानून के जरिए ही कार्यालय में प्रवेश करना पड़ता है, और उस कार्यालय में भी अन्य कार्यालय में विहित राजनीति से गुजरने की संभवना को नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता। फर्क इतना ही है अभी तक लोगों का न्याय पर विश्वास रहा है।

राजनीतिक दलों की स्वार्थांधता :-

शरद जोशी ने "अन्धों का हाथी" नाटक में राजनीतिक दलों की स्वार्थांधता पर तीखा व्यंग्य किया है। आज के राजनीतिक दल आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। पार्टियों में मतभेद होने से उनके विचार अलग–अलग होते हैं। और विशेष बात यह है कि जिस जनता का मतदान प्राप्त कर ये पार्टियाँ लोकसभा या विधानसभा में अपना रोब डालने का प्रयास करती हैं, वे पार्टियाँ ही जनता को उलझी रखने में प्रयत्नशील रहती हैं। निम्नांकित वार्तालाप देखिए –

अन्धा – 1 : आप सब मंच पर इस तरह बेकार की बहस करते हैं, अच्छा लगता है क्या ?

अन्धा – 3 : मंच पर बेकार की बहसें चलती ही रहती हैं।

अन्धा – 2 : पार्टियों में मतभेद चलता ही रहता है।

अन्धा – 3 : एक–दूसरे की टाँग नहीं खींचेंगे तो प्रजातन्त्र डूब जायेगा।

अन्धा – 4 : एक मजबूत प्रतिपक्ष की आवश्यकता को भुलाया नहीं जा सकता ।

अन्धा – 1 : जनता क्या सोचेगी ?

अन्धा – 2 : जनता उलझी रहेगी, यही तो इसका मकसद है।[28]

इसमें संदेह नहीं कि आज के राजनीतिक दल स्वार्थी हैं। वे स्वार्थ में अंधे हुए हैं। प्रत्येक दल अपना स्वार्थ देखता है और स्वार्थ कारण ही मतभेद बढ़ जाते हैं। ये राजनीतिक दल जनता को भी उलझन में रखते हैं। ये राजनीति दल वोट मिलने पर जनता को जनता – जनार्दन मान लेते हैं, लेकिन चुनाव में जीतने पर जनता की समस्याओं की ओर जितना ध्यान देना आवश्यक है, उतना नहीं देते बल्कि अपना व्यक्तिगत स्वार्थ, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को ही अधिक महत्व देते हैं। जनता को उलझन में रखना वास्तव में जनता के प्रति बेवफाई ही है। ये राजनीति दल वस्तुतः आँखो वाली होकर भी अपने स्वार्थ के कारण अंधे होते हैं।

अंधा भ्रष्टाचार :-

"अंधों का हाथी" इस नाटक में यह दिखाया है कि हाथी की समस्या सुलझाने के लिए सारे लोग अर्थात् नेता प्रयत्न कर रहे हैं। ये लोग इस हाथी की समस्या में इतने एकरुप

हो गये हैं कि उनको ये हाथी की समस्या अब खुद की ही समस्या लगने लगी है। ऐसे वे सोचते हैं। लेकिन ये सब असल में भ्रष्टाचारी लोग हैं। ये समस्या सुलझाने के बजाय भ्रष्टाचार कर रहे हैं। ये सब नेता लोग अपना कार्य करने के लिए भ्रष्टाचार करते हैं। खुद की इज्जत बचाने के लिए ये सब लोग सतर्क रहते हैं। स्वतंत्रता के पचास साल बीतने पर भी भ्रष्टाचार का मामला समाप्त होने के बजाय अधिक दृढ हो रहा है। यह अफसोस की बात है। आज कल भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि नेता लोग भ्रष्टाचार की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देते हैं। आँखे होकर भी अंधे होते हैं और भ्रष्टाचार को ही अंधा बताते है। भ्रष्टाचार चलता ही रहता है, मानो भ्रष्टाचार ही अंधा बन गया है। आजकल समाज के विभिन्न स्थानों में या भागों में, भिन्न भिन्न स्तरों मेंअनेक प्रकार के भ्रष्टाचार चल रहे हैं। सब लोग अपने-अपने स्वार्थ के लिए भ्रष्टाचार का ही मार्ग स्वीकार करते हैं। भ्रष्टाचार के लिए लोग अपनी ईमानदारी खो देते हैं।

वास्तव में हाथी एक राष्ट्रीय समस्या है। लेकिन आजकल प्रत्येक नेता को अपना स्वार्थ ही नजर आता है और अपना उल्लू सीधा करने के लिए कभी वह अपने अंधकार को महत्त्व देता है तो कभी भ्रष्टाचार को। निम्नलिखित वार्तालाप देखा जा सकता है –

अन्धा – 2 : हाथी की समस्या सुलझाते समय हमें प्रायः लगा कि हम स्वंय वह हाथी हैं।

अन्धा – 1 : हमारी एक नाक हैं – अहं की नाक ।

अन्धी : हमारी एक पूँछ है – भ्रष्टाचार की पूँछ ।[29]

<u>अंधा नेतृत्व</u> :–

शरद जी ने "अन्धों का हाथी" नाटक के पात्रों के द्वारा आज के नेता लोगों का चित्रण किया है। जब दो राजकीय दल के लोगों के झगड़े होते हैं तो इन दोनों के झगड़े मिटाने के बाद नेतृत्व हमारे पास आ जाये, इस स्वार्थ से ही हे तीसरे दल नेता उन दोनों में समझौता करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।निःस्वार्थ मदद करने का उनका मुख्य हेतु नहीं रहता कुछ न कुछ खुद का स्वार्थ मन में रखकर ही ये दूसरों को मदद करने का दिखावा करते हैं।

निम्नलिखित वार्तालाप देखिए –

अंधा – 3 : हाथी के स्वरुप को लेकर उन दोनों में मतभेद उभर रहे हैं। ऐसे में हमारा

क्या कर्तव्य बनता है? किसका साथ दें ? किसकी बात मानें ?

अंधा – 4 : दोनों में समझौता कराने के प्रयास किये जायें। इससे हो सकता है नेतृत्व हमारे हाथ में आ जाये ।[30]

नाटककार ने यह दिखाया है कि आज राजनीति में अनेक दल हैं। आज के राजनीतिक दलों में अनेक मतभेद हैं। आज के नेता लोगों की स्वार्थी वृत्ति रही है। ये लोग मौके के इंतजार में ही रहते हैं। मोका मिलते ही खुद का काम करने में माहीर रहते हैं। वे हमेशा खुद का काम पूरा करने के लिए मौका हाथ में आने का इंतजार करते रहते हैं। सब नेता लोग सत्ता अपने ही हाथ में आने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। उनकी दूसरों को सच्चे दिल से मदद करने की इच्छा नहीं रहती है। दूसरों को मदद करते समय वे हमेशा खुद का ही स्वार्थ देखते हैं। वे जनता की समस्या दूर करने के बजाय ये समस्यायें सुलझाने के बाद खुद को फायदा होगा या नहीं होगा? यही सोचकर ही मदद करते हैं। ऐसे ही स्वार्थी लोगों पर शरदजी ने व्यंग्य किया है जो मार्मिक और यथार्थवादी ही हैं। जिससे समाज के स्वार्थी लोगों का पर्दाफाश किया गया है। आज की राजनीति में नेतृत्व को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। अतः प्रत्येक राजनीतिक दल के नेता नेतृत्व के लालच में फँसे रहते हैं। लेकिन सच यह है कि आज का राजनीतिक नेतृत्व ही अंधा बन गया है। आँखें होकर भी अंधा।

अंधी सहानुभूती :–

आज के नेता लोग समाज की तरफ अच्छी नजर से नहीं देखते, उसकी हिफाजत भी ठीक तरह से नहीं करते। वे हमेशा खुद की ही हिफाजत करने में मशगूल रहते हैं। ऐसे ही लोगों पर शरदजी ने व्यंग्य किया है। अंधा – 1 का कथन द्रष्टव्य है – "मरने दो। राष्ट्रीय समस्या खड़ी होती है, कुछ की बली तो लेती ही हैं। हम सहानुभूति का प्रदर्शन करेंगे, जाँच करवायेंगे, पीड़ितों को थोडी–सी सहायता बाँट देंगे। और क्या किया जा सकता है। सबसे अच्छी बात है कि वह मंच पर नहीं, और हम सुरक्षित हैं।"[31]

नाटककार ने यहाँ दिखाया है कि जब कभी राष्ट्र पर संकट आता है तो ये राष्ट्र के नेता, मंत्री लोग राष्ट्र को बचाने के लिए या राष्ट्र की जनता को बचाने की कोशिश नहीं करते हैं। और कहते है कि मरने दो कुछ की बलि गयी तो हम उनके यहाँ जाकर सहानुभूति का प्रदर्शन करेंगे, पीडितों की, गरीबों की थोड़ी सी सहायता करेंगे। हमें दुख हुआ है ऐसा नाटक करेंगे। मतलब गरीब लोगों को उल्लू बनायेंगे। उन पर संकट आये तो आयें। लेकिन हम पर संकट नहीं आया है, यही हम देखेंगे। हमारी ही हिफाजत हम करेंगे। शरद जी ने आज के नेता लोगों के मन में आम जनता के लिए कितनी सहानुभूति है इसका चित्रण किया है। और ये बात सच ही है कि आज के नेता लोगों में आम जनता के लिए मन में ऊपरी सहानुभूति है। वे झूठ–मूठ की दया जनता पर दिखाते हैं। वस्तुतः "अंधो का हाथी" नाटक में चित्रित यह अंधी सहानुभूति ही है।

<u>अंधी उपेक्षा</u> :–

नाटककार शरद जोशी ने "अंधों का हाथी" नाटक में यह दर्शाया है कि आज के नेता सामान्य जनता की हमेशा उपेक्षा ही करते रहते हैं। वस्तुतः सामान्य जनता से वोट प्राप्त कर ही आज के नेता कुर्सी पर बैठते हैं। लेकिन कुर्सी पर बैठने पर उन्हें ऐसा लगता है कि सामान्य जनता मूर्ख है। उनकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। सामान्य जनता को मूर्ख बनाना आसान ही हैं क्योंकि वह मूर्ख है। निम्नांकित वार्तालाप देखिए –

अंधा – 3 : हम जानते हैं कि जनता को कैसे मूर्ख बनाया जाता है।

अन्धा – 4 : जनता मूर्ख है।[32]

भारत स्वतंत्र हुआ है। लेकिन स्वतंत्र भारत की जनता आज भी स्वतंत्र नहीं है। वह आज भी उपेक्षित है। नेताओं द्वारा जनता को मूर्ख बनाया जाता है और उसकी मूर्खता का फायदा ये नेता लोग ही उठाते हैं। सामान्य जनता की यह नियति बन गई है। वस्तुतः जनता की यह उपेक्षा अंधी उपेक्षा ही है। जनता को उपेक्षित रखना राष्ट्रीय कर्तव्य के खिलाफ है। इस पर नाटककार ने व्यंग्य कसा है।

सूत्रधार की अंधी हत्या :-

जब सूत्रधार "हाथी की समस्या" अर्थात राष्ट्रीय समस्या लेकर पाँच अंधों के पास जाता है तब ये अंधे समस्या सुलझाने की कोशिश करने का नाटक करते हैं। जब यह सूत्रधार इनके यहाँ जाकर फिर समस्याओं को सुलझाने को कहता है तो ये पाँच अंधे सूत्रधार का ही रास्ता साफ कर देते हैं। वे कहते हैं कि इस सूत्रधार के बच्चे ने ही समस्या खड़ी करके हमें फँसाया था। यह हमारा शत्रु है, यह बार–बार प्रश्न उठानेवाला हमारा शत्रु है। इसे मारना ही चाहिए ओर सब अंधे मिलकर उस बेचारे बिना कसूर के सूत्रधार को मार डालते है।[33] आज राजनीति में जो भी आदमी समाज सुधार के लिए या समस्याओं को लेकर जाता है तो नेता लोग उस आदमी को मार डालते हैं। जो कोई अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है उसको ही ये नेता लोग खत्म करते हैं। वस्तुतः सूत्रधार को खत्म करने से कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती – न राजनीतिक नेताओं की, न समाज की, न राष्ट्र की। एक सूत्रधार मरने पर दूसरा सूत्रधार निर्माण हो सकता है। वह पुनश्च समस्याओं को लेकर नेताओं के पास जा सकता है। शायद उसकी फिर हत्या होगी। फिर नया सूत्रधार निर्माण होगा। फिर नयी समस्या। फिर नेताओं की फजीहत। अपने बचाव के लिए फिर सूत्रधार की हत्या। इस प्रवाह में हत्या का सिलसिला जारी रहेगा और नये सूत्रधार का सिलसिला भी जारी रहेगा। अतः सूत्रधार की हत्या, हत्या नहीं, अंधी हत्या है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ,

1. शरद जोशी ने अपने दोनों व्यंग्य नाटक भारत में घोषित अपातकालीन स्थिति (1975) के बाद लिखे हैं। अतः इन नाटकों पर आपातकालीन स्थिति का प्रभाव कम–अधिक मात्रा में दिखाई देता है। विशेषतः "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में चित्रित नवाब पात्र पर आपातकालीन प्रभाव स्पष्टतया दिखाई पड़ता है।
2. नाटककार ने नवाब के माध्यम से नवाबी थाटबाट की राजनीति को बड़ी ही सफलता के साथ उजागर किया है और दर्शाया है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत के लोकतंत्र में

लोकतंत्र की जगह नवाबतंत्र ही अधिक मात्रा में कार्यरत है। नवाब द्वारा दिये जानेवाले झूठे आश्वासन, झूठी आत्म–प्रशंसा और झूठी इज्जत का पर्दाफाश करने में नाटककार कामयाब हुआ है।

3. कोतवाल जैसे अधिकारी के माध्यम से नाटककार ने यह दर्शाया है कि आज का अधिकारी वर्ग कर्तव्य को कम महत्व देता है और अपने सुविधा भोगी जीवन को सबकुछ मानकर चलता है। उसकी स्वार्थांधता विशेष उल्लेखनीय है।

4. नाटक में प्रयुक्त तीन चिंतकों के माध्यम से यह दिखाई देता है कि ये चिंतक सही अर्थ में चिंतक नहीं हैं बल्कि वे अपने वैयक्तिक स्वार्थ के लिए नवाब की खुशामत करनेवाले और सुविधाभोगी व्यक्ति हैं। वे चिंतक कम और भोगी ज्यादा हैं।

5. नाटक में प्रयुक्त दरबारी और नागरिक ऐसे व्यक्ति हैं जो नवाब की चापलुसी करने में विशेष मशगुल रहते हैं।

6. नाटककार ने अलादाद खाँ शब्द का प्रयोग गधे के और मानव के लिए किया है। और व्यंग्य का केंद्र बिंदु "अलादाद खाँ" ही है।

7. "अंधों का हाथी" नाटक में पशु–प्रतीक का प्रयोग कर नाटककार ने जिस राजनीतिक व्यंग्य की निर्मिति की है वह लाजवाब है।

8. नाटककार ने हाथी पशु–प्रतीक को राष्ट्रीय समस्या के रुप में अपनाया है और साथ ही जिन चार अंधों ओर एक अंधी का प्रयोग किया है वह वास्तव में स्वातंत्र्योत्तर भारत की अंधी राजनीति का ही मार्मिक चित्र है। आज समूचे भारत में जो राजनीति दिखाई देती है। वह ज्यादातर अंधी राजनीति है।

9. अंधों के द्वारा सूत्रधार की की गयी हत्या अमानवीय है लेकिन यथार्थवादी है। आज के राजनीतिक नेता ऐसे नेता हैं जो राष्ट्रीय समस्या की ओर ध्यान नहीं देते हैं। किंतु राष्ट्रीय समस्या को लेकर चलने वाले सूत्रधार की हत्या करने में ही अपनी इतिकर्तव्यता मानते हैं। लेकिन सच यह है कि प्रश्नकर्ता सूत्रधार कभी नहीं मरता है। राष्ट्र की हर समस्या के साथ उसका उदयास्त होता रहता है।

10. दोनों विवेच्य नाटकों पर कम अधिक मात्रा में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के अंधेर नगरी प्रहसन का कुछ प्रभाव परिलक्षित होता है। फिर भी शरद जोशी के अपने दोनों नाटक व्यंग्य की दृष्टि से अपना मौलिक स्थान रखते ही हैं। यही नाटककार की व्यंग्यधर्मिता की कामयाबी है।

<u>संदर्भ</u> :-

1. दो व्यंग्य नाटक : एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.20
2. वहीं, पृ.40
3. वहीं, पृ.17
4. वहीं, पृ.17
5. वहीं, पृ.17, 18
6. वहीं, पृ.42
7. वहीं, पृ.58,59
8. वहीं, पृ.69
9. वहीं, पृ.46
10. वहीं, पृ.41
11. वहीं, पृ.20
12. वहीं, पृ.70, 71
13. वही, पृ.69
14. वहीं, पृ.72
15. वहीं, पृ.28
16. वहीं, पृ.31
17. वहीं, पृ.48, 49
18. वहीं, पृ.61
19. वहीं, पृ.30
20. वहीं, पृ.30
21. वहीं, पृ.15
22. वहीं, पृ.22

23. वही, पृ.21

24. वही, पृ.18

25. वही, पृ.21

26. दो व्यंग्य नाटक – अंधों का हाथी – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.90

27. वही, पृ.92

28. वही, पृ.88

29. वही, पृ.93

30. वही, पृ.106

31. वही, पृ.117

32. वही, पृ.119

33. वही, पृ.119